120

DPL-02

June - Examination 2016

Diploma in Prakrit Language Examination

प्राकृत गद्य – पद्य

Paper - DPL-02

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

निर्देश : यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों 'अ', 'ब' और खण्ड 'स' में विभाजित है । खण्ड अ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।

(खण्ड – अ) **$10 \times 2 = 20$**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित सभी प्रश्नों को करना अनिवार्य है। सभी की उत्तर सीमा अधिकतम 30 शब्द होगी। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1) (i) समणसुत्तं के अनुसार कौन विश्वास किए जाने योग्य नहीं है?

(ii) आचारांग के अनुसार इच्छाओं की पूर्ति न होने पर मनुष्य क्या करता है?

(iii) उत्तराध्ययन के अनुसार मनुष्य के लिए चार परम दुर्लभ अंग कौन–कौन से हैं?

(iv) दशवैकालिक के अनुसार परिग्रह किसे गहा गया है?

(v) वज्जालग्ग के अनुसार सज्जन व्यक्ति का लक्षण बताइए।

(vi) गउडवहो की विशेषताएँ बताइए।

(vii) 'भगवती आराधना' की रचना किस प्राकृत में हुई तथा इसमें कुल कितने अधिकार व गाथाएँ हैं?

(viii) अष्टपाहुड के अनुसार 'अन्तरात्मा' को परिभाषित कीजिए।

(ix) पुरोहित के कितने दामाद थे? उनके नाम बताइए।

(x) रोहिणी ने पाँच शालिअक्षत लेकर क्या किया?

(खण्ड – ब) **$4 \times 10 = 40$**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नों में से कोई 4 (चार) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। तथा सभी उत्तर की अधिकतम सीमा 200 शब्द होगी। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

2) कम्मं चिणंति सवसा, तस्तुदयम्मि उ परव्वसा होंति।
रुक्खं दुरुहइ सवसो, विगलइ स परव्वसो तत्तो।।

3) धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

4) लाभो त्ति ण मज्जेज्जा, अलाभो त्ति ण सोएज्जा, बहुं पि लद्धुं ण णिहे।
परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा। अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा।

5) संतेहि असंतेहि य परस्स किं जंपिएहि दोसेहिं।
अत्थो जसो न लब्भइ सो वि अमित्तो कओ होइ।।

6) भावं तिविहपयारं सुहासुहं सुद्धमेव णायव्वं।
असुहं च अट्टरुद्दं सुहधम्मं जिणवरिंदेहिं।

7) जे केइ सरीरे सत्ता वन्ने य सव्वसो।
मणसा कायवक्केणं सव्वे ते दुक्खसंभवा।।

8) णवरं दोसा तेच्चेअ जे मअस्स वि जणस्स सुव्वंति
णज्जंति जिअंतस्स वि जे णवर गुणा वि तेच्चेअ।

9) जावइयाइं दुक्खाइं होंति लोयम्मि चदुगदिगदाइं।
सव्वाणि ताणि हिंसाफलाणि जीवस्स जाणाहि।।

(खण्ड – स) **$2 \times 20 = 40$**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नों में से कोई 2 (दो) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है तथा सभी उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द होगी। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

10) पुरोहिओ कहेइ–अज्ज रत्तीए दारं न उग्घाडियव्वं, अहं जागरिस्सं।' ते दोण्णि जामायरा संझाए गामे विलसिउं गया, विविहकीलाओ कुणंता नट्टाइं च पासन्ता, मज्झरत्तीए गिहद्वारे समागया। पिहिअं दारं दट्ठूण दारुघाडणाए उच्चसरेण अक्कोसंति – 'दारं उग्घाडेसु' त्ति तया दारसमीवे सयणत्थे पुरोहिओ जागरंतो कहेइ–मजझरत्तिं जाव कत्थं तुम्हे थिआ? अहुणा न उग्घाडिस्सं, जत्थ उग्घाडिअद्वारं अत्थि, तत्थ गच्छेह' एवं कहिऊण मोणेण थिओ। तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरंगसालाए गया। तत्थ आत्थरणाभावे अईवसीयबाहिया तुरंगमपिट्ठच्छाइ आवरणवत्थं गहिऊण भूमीए सुत्ता। तया विजयरामेण जामाउणा चिंतिअं – एत्थ सावमाणं ठाउं न उइअं।' तओ सो मित्त कहेइ – हे मित्त! अम्हं सुहसज्जा का? इमं भूलोट्टणं च कत्थ? अओ इओ गमणं चिअ वरं।' स मित्तो बोल्लेइ – 'एआरिसदुहे वि परन्नं कत्थ?

अहं तु एत्थ ठाहिस्सं। तुमं गंतुमिच्छसि जइ', तया गच्छसु।' तओ सो पच्चूसे पुरोहियसमीवे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गीअ। तया पुरोहिओ सुट्ठ त्ति कहेइ। एवं सो विजयरामो 'भूसज्जाए विजयरामो' वि निग्गओ।

अहुणा केवलं केसवो जामायरो तत्थ थिओ संतो गंतुं नेच्छइ। पुरोहिओ वि केसवजामाउणो निक्कासणत्थं जुत्तिं विआरेइ। एगया नियपुत्तस्स कण्णे किंचि वि कहिऊण जया केसव जामायरो भोयणत्थं उवविट्ठो, पुरोहिअस्स य पुत्तो समीवे ठिओ वट्टइ, तया पुरोहिओ समागओ समाणो पुत्ते पुच्छइ – 'वच्छ!' एत्थ मए रुप्पगं मुत्त तं च केण गहिअं? सो कहइ – 'अहं न जाणामि।'

11) रायगिहे नयरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसइ। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था।

तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाह–दारया होत्था, तंजहा–धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए।

तस्स णं धण्णस्य सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तंजहा–उज्झिया, भोगवइया, रक्खिया, रोहिणिया।

मए गएंसि इमस्स कुडुंबस्स आलंबे किं भविस्सइ? एवं संपेहित्ता चउण्ह सुण्हाणं आमंतेइ। तस्सेव पुरओ जेट्ठं सुण्हं उज्झिइयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

'तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खइ जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि'।

त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ।

धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हित्ता सा एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए मणोगए संकप्पे समुपज्जेत्था एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सइ तया अहं अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि ति। संपेहित्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेइ।

12) कालंतरे गामंतराओ पिया समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ–'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए गणेसस्स पहावसालिणी पडिमा अत्थि।' तया लोगेहि सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए गणेसस्स सुंदरयमा अणुवमा मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवे लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे।

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। तं गणेसपडिमं दट्ठूणं पुत्तं कहेइ– ''हे पुत्त! एसच्चिय सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि? जइ तुमं एआरिसी पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा।''

पुत्तो वि कहेइ – ''हे पियर! एसा गणेसपडिमा मम कया। इमाए हिट्ठंमि गुत्तं मए नामंपि लिहिअमत्थि।'' पिआवि लिहिअनामं वाइऊण खिज्जहियओ पुत्तं कहेइ–'' हे पुत्त! अज्जयणाओ तुं एरिसं सिप्पकलाजुत्तं सुंदरयमं पडिमं कया वि न करिस्ससि, जओ हंत व सिप्पकलासु भुल्लं दंसंतो, तया तुमं पि सोहणयरकज्जकरणतल्लिच्छो सण्हं सण्हं सिप्पं कुणंतो आसि, तेण तव सिप्पकलावि वड्ढन्ती हुवीअ। अहुणा 'मम सरिच्छो नन्नो' इह मंदूसाहेण तुम्ह एआरिसी सिप्पकला न संभविहिइ।'' एवं सो सरहस्सं पिउवयणं सोच्चा पाएसु पडिऊण पिउत्तो पसंसाकरावणरुवनिआवराहं खामेइ, परंतु सो सोमदत्तो तओ आरब्भ तारिसिं सिप्पकलं काउं असमत्थो जाओ।

13) तेहिं जामायरेहिं पायत्तिगं वाइअं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतुं नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ – 'कहं एए नीसारिअव्वा? साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा संति, तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा।' पुरोहिओ नियं भज्जं पुच्छइ– एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि?' सा कहेइ–

'अइप्पियजामायराणं तिकालं दहि–घय–गुडमीसिअमन्नं पक्कन्नं च सएव देमि।' पुरोहिओ भज्जं कहेइ – अज्जयणाओ आरब्भ तुमए जामायराणं

वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो। पियस्स आणा अणइक्कमणीअ, त्ति चिंतिऊण सा भोयणकाले ताणं थूलं रोट्टगं घयजुत्तं देइ। तं दट्ठुणं पढमो मणीरामो जामाया मित्ताणं कहेइ – ''अहुणा एत्थ वसणं न जुत्तं, नियघरंमि अओ साउभोयणं अत्थि, तओ इओ गमणं चिय सेयं। ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण हं गमिस्सामिं''। ते कहिंति–भो मित्त! विणा मुल्लं भोयणं कत्थ सिया, एयं वज्जकुडरोट्टगं साउं गणिऊण भोत्तव्वं, जओ– 'परन्नं दुल्लहं लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ? तव इच्छा सिया तया गच्छसु, अम्हाणं ससुरो कहिही तया गमिस्सामो।'' एवं मित्ताणं वयणं सोच्चा पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छिता सिक्खं आणं च मग्गेइ। ससुरो वि तं सिक्खं दाऊण 'पुणावि आगच्छेज्जा' एवं कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्णं देइ। एवं पढमो जामायरो 'वज्जकुडेण मणीरामो' निस्सरिओ।